يَدَيۡهِ وَتَفۡصِيۡلَ كُلِّ شَيۡءٍ وَّهُدًى وَّرَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿١١١﴾ ع

तस्दीक़ है और हर चीज़ का मुफ़स्सल बयान और मुसल्मानों के लिये हिदायत व रह़मत

اٰيَاتُهَا ٤٣ | ١٣ سُوۡرَةُ الرَّعۡدِ مَدَنِيَّةٌ ٩٦ | رُكُوۡعَاتُهَا ٦

सूरए रा'द मदनिय्या है, इस में तेंतालीस आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓمّٓرٰ ۟ قف تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ ؕ وَالَّذِيۡۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ مِنۡ رَّبِّكَ الۡحَقُّ وَ

येह किताब की आयतें हैं[2] और वोह जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा[3] ह़क़ है[4]

لٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿١﴾ اَللّٰهُ الَّذِىۡ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيۡرِ عَمَدٍ

मगर अक्सर आदमी ईमान नहीं लाते[5] अल्लाह है जिस ने आस्मानों को बुलन्द किया बे सुतूनों के कि

تَرَوۡنَهَا ثُمَّ اسۡتَوٰى عَلَى الۡعَرۡشِ وَسَخَّرَ الشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجۡرِىۡ

तुम देखो[6] फिर अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है और सूरज और चांद को मुसख़्ख़र किया[7] हर एक एक ठहराए हुए

لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الۡاَمۡرَ يُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لَعَلَّكُمۡ بِلِقَآءِ رَبِّكُمۡ

वा'दे तक चलता है[8] अल्लाह काम की तदबीर फ़रमाता और मुफ़स्सल निशानियां बताता है[9] कहीं तुम अपने रब का मिलना

वाले ईमानदारों को बचा लिया। **241 :** या'नी अम्बिया की और उन की क़ौमों की **242 :** जैसे कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िए से बड़े बड़े नताइज निकलते हैं और मा'लूम होता है कि सब्र का नतीजा सलामत व करामत है और ईज़ा रसानी व बद ख़्वाही का अन्जाम नदामत और अल्लाह पर भरोसा रखने वाला काम्याब होता है और बन्दे को सख़्तियों के पेश आने से मायूस न होना चाहिये, रह़मते इलाही दस्त गीरी करे तो किसी की बद ख़्वाही कुछ नहीं कर सकती। इस के बा'द क़ुरआने पाक की निस्बत इर्शाद होता है : **243 :** जिस को किसी इन्सान ने अपनी त़रफ़ से बना लिया हो क्यूं कि इस का ए'जाज़ (आ़जिज़ कर देना) इस के मिनल्लाह (अल्लाह की त़रफ़ से) होने को क़त़्ई त़ौर पर साबित करता है। **244 :** तौरैत इन्जील वग़ैरा कुतुबे इलाहिय्यह की **1 :** सूरए रा'द मक्किय्या है और **एक** रिवायत ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُمَا से येह है कि दो आयतों "لَا يَزَالُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا تُصِيۡبُهُمۡ" और "يَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَسۡتَ مُرۡسَلًا" के सिवा बाक़ी सब मक्की हैं, और **दूसरा** क़ौल येह है कि येह सूरह मदनी है, इस में छ[6] रुकूअ़ तेंतालीस या पेंतालीस आयतें और आठ सो पचपन कलिमे और तीन हज़ार पांच सो छ[6] ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ की **3 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **4 :** कि इस में कुछ शुबा नहीं **5 :** या'नी मुश्रिकीने मक्का जो येह कहते हैं कि येह कलाम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का है इन्हों ने ख़ुद बनाया, इस आयत में उन का रद फ़रमाया और इस के बा'द अल्लाह तआ़ला ने अपनी रबूबिय्यत के दलाइल और अपने अ़जाइबे क़ुदरत बयान फ़रमाए जो उस की वह़दानिय्यत पर दलालत करते हैं **6 :** इस के दो मा'ना हो सकते हैं, **एक** येह कि आस्मानों को बिग़ैर सुतूनों के बुलन्द किया जैसा कि तुम इन को देखते हो या'नी ह़क़ीक़त में कोई सुतून ही नहीं है और येह **मा'ना** भी हो सकते हैं कि तुम्हारे देखने में आने वाले सुतूनों के बिग़ैर बुलन्द किया, इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि सुतून तो हैं मगर तुम्हारे देखने में नहीं आते और क़ौले अव्वल सह़ीह़ तर है इसी पर जुम्हूर हैं। (خازن وجمل) **7 :** अपने बन्दों के मनाफ़ेअ़ और अपने बिलाद के मसालेह़ के लिये, वोह ह़स्बे हुक्म गर्दिश में हैं। **8 :** या'नी फ़नाए दुन्या के वक़्त तक। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُمَا ने फ़रमाया कि اَجَلٍ مُّسَمًّى से इन के दरजात व मनाज़िल मुराद हैं या'नी वोह अपनी मनाज़िल व दरजात में एक ग़ायत (ह़द) तक गर्दिश करते हैं जिस से तजावुज़ नहीं कर सकते, शम्सो क़मर में से हर एक के लिये सैरे ख़ास जिहते ख़ास की त़रफ़ सुरअ़त व बत़ू व ह़रकत की मिक़्दारे ख़ास से मुक़र्रर फ़रमाई है। **9 :** अपनी वह़दानिय्यत व कमाले क़ुदरत की।

www.dawateislami.net

تُوْقِنُوْنَ ﴿۲﴾ وَهُوَ الَّذِیْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِیْهَا رَوَاسِیَ وَاَنْهٰرًا ؕ

यक़ीन करो[10] और वोही है जिस ने ज़मीन को फैलाया और इस में लंगर[11] और नहरें बनाईं

وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِیْهَا زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ یُغْشِی الَّیْلَ النَّهَارَ ؕ

और ज़मीन में हर क़िस्म के फल दो दो त़रह़ के बनाए[12] रात से दिन को छुपा लेता है

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۳﴾ وَفِی الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ

बेशक इस में निशानियां हैं ध्यान करने वालों को[13] और ज़मीन के मुख़्तलिफ़ क़ित़्ए (टुकड़े) हैं और हैं पास पास[14]

وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِیْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَیْرُ صِنْوَانٍ یُّسْقٰى بِمَآءٍ

और बाग़ हैं अंगूरों के और खेती और खजूर के पेड़ एक थाले (गढ़े) से उगे और अलग अलग सब को एक ही पानी

وَّاحِدٍ ۫ قف وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِی الْاُكُلِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ

दिया जाता है और फलों में हम एक को दूसरे से बेहतर करते हैं बेशक इस में निशानियां हैं

یَّعْقِلُوْنَ ﴿۴﴾ وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِیْ خَلْقٍ

अ़क़्ल मन्दों के लिये[15] और अगर तुम तअ़ज्जुब करो[16] तो अचम्भा (तअ़ज्जुब) तो उन के इस कहने का है कि क्या हम मिट्टी हो कर फिर

جَدِیْدٍ ؕ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓىِٕكَ الْاَغْلٰلُ فِیْۤ

नए बनेंगे[17] वोह हैं जो अपने रब से मुन्किर हुए और वोह हैं जिन की गरदनों में

اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۵﴾ وَیَسْتَعْجِلُوْنَكَ

तौ़क़ होंगे[18] और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उसी में रहना और तुम से अ़ज़ाब की

10 : और जानो कि जो इन्सान को नीस्ती के बा'द हस्त (या'नी जब वोह था ही नहीं तो उस को पैदा) करने पर क़ादिर है वोह उस को मौत के बा'द भी ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **11 :** या'नी मज़बूत़ पहाड़ **12 :** सियाह व सफ़ेद, तुर्श व शीरीं, सग़ीर व कबीर, बर्री व बुस्तानी (सह़राई व बाग़ाती), गर्म व सर्द, तर व ख़ुश्क वग़ैरा। **13 :** जो समझें कि येह तमाम आसार सानेअ़ ह़कीम (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) के वुजूद पर दलालत करते हैं। **14 :** एक दूसरे से मिले हुए, इन में कोई क़ाबिले ज़राअ़त है कोई ना क़ाबिले ज़राअ़त, कोई पथरीला कोई रेतीला। **15 :** ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : इस में बनी आदम के क़ुलूब की एक तम्सील (मिसाल) है कि जिस त़रह़ ज़मीन एक थी इस के मुख़्तलिफ़ क़ित़्आ़त (टुकड़े) हुए, उन पर आस्मान से एक ही पानी बरसा, उस से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फल फूल बेल बूटे अच्छे बुरे पैदा हुए, इसी त़रह़ आदमी ह़ज़रते आदम से पैदा किये गए, इन पर आस्मान से हिदायत उतरी, उस से बा'ज़ दिल नर्म हुए उन में ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ पैदा हुवा, बा'ज़ सख़्त हो गए वोह लह्वो लअ़ब में मुब्तला हुए तो जिस त़रह़ ज़मीन के क़ित़्आ़त अपने फूल फल में मुख़्तलिफ़ हैं इसी त़रह़ इन्सानी क़ुलूब अपने आसार व अन्वार व असरार में मुख़्तलिफ़ हैं। **16 :** ऐ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब करने से बा वुजूदे कि आप इन में सादिक़ो अमीन मा'रूफ़ थे **17 :** और उन्हों ने कुछ न समझा कि जिस ने इब्तिदाअन बिग़ैर मिसाल के पैदा कर दिया उस को दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है। **18 :** रोज़े क़ियामत।

www.dawateislami.net

بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَ اِنَّ رَبَّكَ

जल्दी करते हैं रहमत से पहले[19] और इन से अगलों की सज़ाएं हो चुकीं[20] और बेशक तुम्हारा रब

لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝۶ وَ

तो लोगों के ज़ुल्म पर भी उन्हें एक तरह की मुआफ़ी देता है[21] और बेशक तुम्हारे रब का अज़ाब सख़्त है[22] और

يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَاۤ اَنْتَ

काफ़िर कहते हैं इन पर इन के रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी[23] तुम तो

مُنْذِرٌ وَّ لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝۷ ع اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَ مَا تَغِيْضُ ع

डर सुनाने वाले हो और हर क़ौम के हादी[24] **अल्लाह** जानता है जो कुछ किसी मादा के पेट में है[25] और पेट जो

19 : मुश्रिकीने मक्का और येह जल्दी करना ब तरीके तमस्खुर (बतौरे मज़ाक़) था और रहमत से सलामतो आफ़िय्यत मुराद है। **20 :** वोह भी रसूलों की तक्ज़ीब और अज़ाब का तमस्खुर किया करते थे, उन का हाल देख कर इब्रत हासिल करना चाहिये। **21 :** कि उन के अज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता और उन्हें मोहलत देता है। **22 :** जब अज़ाब फ़रमाए। **23 :** काफ़िरों का येह क़ौल निहायत बे ईमानी का क़ौल था जितनी आयात नाज़िल हो चुकी थीं और मो'जिज़ात दिखाए जा चुके थे सब को उन्हों ने कल्अदम क़रार दे दिया, येह इन्तिहा दरजे की ना इन्साफ़ी और हक़ दुश्मनी है, जब हुज्जत क़ाइम हो चुके और ना क़ाबिले इन्कार बराहीन पेश कर दिये जाएं और ऐसे दलाइल से मुद्दआ साबित कर दिया जाए जिस के जवाब से मुख़ालिफ़ीन के तमाम अहले इल्मो हुनर आजिज़ो मुतहय्यर (हैरान) रहें और उन्हें लब हिलाना और ज़बान खोलना मुहाल हो जाए। ऐसे आयाते बय्यिना और बराहीने वाज़ेहा (रोशन दलाइल) व मो'जिज़ाते ज़ाहिरा देख कर येह कह देना कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरती रोज़े रोशन में दिन का इन्कार कर देने से भी ज़ियादा बदतर और बातिल तर है और हक़ीक़त में येह हक़ को पहचान कर उस से इनाद (सरकशी) व फ़िरार है, किसी मुद्दआ पर जब बुरहाने क़वी (मज़बूत दलील) क़ाइम हो जाए फिर उस पर दोबारा दलील क़ाइम करनी ज़रूरी नहीं रहती और ऐसी हालत में तलबे दलील इनाद व मुकाबरा (सरकशी व झगड़ा करना) होता है, जब तक कि दलील को मजरूह (बातिल) न कर दिया जाए कोई शख़्स दूसरी दलील के तलब करने का हक़ नहीं रखता और अगर येह सिल्सिला क़ाइम कर दिया जाए कि हर शख़्स के लिये नई बुरहान क़ाइम की जाए जिस को वोह तलब करे और वोही निशानी लाई जाए जो वोह मांगे तो निशानियों का सिल्सिला कभी ख़त्म न होगा, इस लिये हिक्मते इलाहिय्यह येह है कि अम्बिया को ऐसे मो'जिज़ात दिये जाते हैं जिन से हर शख़्स उन के सिद्क़ व नुबुव्वत का यक़ीन कर सके और बेश्तर वोह उस क़बील (क़िस्म) से होते हैं जिस में उन की उम्मत और उन के अहद (ज़माने) के लोग ज़ियादा मश्क़ व महारत रखते हैं, जैसे कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने में इल्मे सेहर (जादू का इल्म) अपने कमाल को पहुंचा हुवा था और उस ज़माने के लोग सेहर के बड़े माहिरे कामिल थे तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को वोह मो'जिज़ा अता हुवा जिस ने सेहर को बातिल कर दिया और साहिरों (जादूगरों) को यक़ीन दिला दिया कि जो कमाल हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दिखाया वोह रब्बानी निशान है, सेहर (जादू) से उस का मुक़ाबला मुम्किन नहीं। इसी तरह हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने में तिब इन्तिहाए उरूज पर थी, हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات को शिफ़ाए अमराज़ व एहयाए अम्वात (बीमारियों से शिफ़ा और मुर्दों को ज़िन्दा करने) का वोह मो'जिज़ा अता फ़रमाया गया जिस से तिब के माहिर आजिज़ हो गए और वोह इस यक़ीन पर मजबूर थे कि येह काम तिब से ना मुम्किन है ज़रूर येह क़ुदरते इलाही का ज़बर दस्त निशान है, इसी तरह सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारक में अरब की फ़साहतो बलागत औजे कमाल पर पहुंची हुई थी और वोह लोग ख़ुश बयानी में आलम पर फ़ाइक़ थे, सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को वोह मो'जिज़ा अता फ़रमाया जिस ने उन्हें आजिज़ व हैरान कर दिया और उन के बड़े से बड़े लोग और उन के अहले कमाल की जमाअतें क़ुरआने करीम के मुक़ाबिल एक छोटी सी इबारत पेश करने से भी आजिज़ व क़ासिर रहीं और क़ुरआन के इस कमाल ने येह साबित कर दिया कि बेशक येह रब्बानी अज़ीम निशान है और इस का मिस्ल बना लाना बशरी क़ुव्वत के इम्कान में नहीं, इस के इलावा और सदहा मो'जिज़ात सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने पेश फ़रमाए जिन्हों ने हर तबके के इन्सानों को आप के सिद्क़े रिसालत का यक़ीन दिला दिया इन मो'जिज़ात के होते हुए येह कह देना कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी किस क़दर इनाद और हक़ से मुकरना है। **24 :** अपनी नुबुव्वत के दलाइल पेश करने और इत्मीनान बख़्श मो'जिज़ात दिखा कर अपनी रिसालत साबित कर देने के बा'द अहकामे इलाहिय्यह पहुंचाने और ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाने के सिवा आप पर कुछ लाज़िम नहीं और हर हर शख़्स के लिये उस की तल्बीदा (मांगी हुई) जुदा जुदा निशानियां पेश करना आप पर ज़रूरी नहीं जैसा कि आप से पहले हादियों (अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام) का तरीक़ा रहा है। **25 :** नर, मादा एक या ज़ियादा وَغَيْرَ ذٰلِك ।

www.dawateislami.net

الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَیْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ﴿۸﴾ عٰلِمُ الْغَیْبِ

कुछ घटते और बढ़ते हैं[26] और हर चीज़ उस के पास एक अन्दाज़े से है[27] हर छुपे और

وَالشَّهَادَةِ الْكَبِیْرُ الْمُتَعَالِ ﴿۹﴾ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ

खुले का जानने वाला सब से बड़ा बुलन्दी वाला[28] बराबर हैं जो तुम में बात आहिस्ता कहे और जो

جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ بِالَّیْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ﴿۱۰﴾ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ

आवाज़ से और जो रात में छुपा है और जो दिन में राह चलता है[29] आदमी के लिये बदली वाले

مِّنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ یَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا

फ़िरिश्ते हैं उस के आगे और पीछे[30] कि ब हुक्मे ख़ुदा उस की हिफ़ाज़त करते हैं[31] बेशक अल्लाह

یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ

किसी क़ौम से अपनी ने'मत नहीं बदलता जब तक वोह ख़ुद[32] अपनी हालत न बदल दें और जब अल्लाह किसी क़ौम से बुराई

سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿۱۱﴾ هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمُ

चाहे[33] तो वोह फिर नहीं सकती और उस के सिवा उन का कोई हिमायती नहीं[34] वोही है कि तुम्हें बिजली

الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّیُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿۱۲﴾ ۚ وَیُسَبِّحُ الرَّعْدُ

दिखाता है डर को और उम्मीद को[35] और भारी बदलियां उठाता है और गरज उसे सराहती (ख़ुदा की ता'रीफ़ करती) हुई

بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِیْفَتِهٖ ۚ وَیُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَیُصِیْبُ بِهَا مَنْ

उस की पाकी बोलती है[36] और फ़िरिश्ते उस के डर से[37] और कड़क भेजता है[38] तो उसे डालता है जिस पर

---

26 : या'नी मुद्दत में किस का हम्ल जल्द वज़्अ़ (बच्चा जल्द पैदा) होगा किस का देर में। हम्ल की कम से कम मुद्दत जिस में बच्चा पैदा हो कर ज़िन्दा रह सके छ[6] माह है और ज़ियादा से ज़ियादा दो साल येही हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया और इसी के हज़रते इमाम अबू हनीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़ाइल हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह भी कहा है कि पेट के घटने बढ़ने से बच्चे का क़वी, ताम्मुल ख़िल्क़त और नाक़िसुल ख़िल्क़त (आ'ज़ा का तमाम और ना तमाम) होना मुराद है। **27 :** कि उस से घट बढ़ नहीं सकती। **28 :** हर नक़्स से मुनज़्ज़ा (पाक)। **29 :** या'नी दिल की छुपी बातें और ज़बान से ब ए'लान कही हुई और रात को छुप कर किये हुए अ़मल और दिन को ज़ाहिर तौ़र पर किये हुए काम सब अल्लाह तआ़ला जानता है कोई उस के इ़ल्म से बाहर नहीं। **30 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि तुम में फ़िरिश्ते नौबत ब नौबत (बारी बारी) आते हैं रात और दिन में और नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े अ़स्र में जम्अ़ होते हैं नए फ़िरिश्ते रह जाते हैं और जो फ़िरिश्ते रह चुके हैं वोह चले जाते हैं। अल्लाह तआ़ला उन से दरयाफ़्त फ़रमाता है कि तुम ने मेरे बन्दे को किस ह़ाल में छोड़ा वोह अ़र्ज़ करते हैं कि नमाज़ पढ़ते पाया और नमाज़ पढ़ते छोड़ा। **31 :** मुजाहिद ने कहा : हर बन्दे के साथ एक फ़िरिश्ता हिफ़ाज़त पर मामूर है जो सोते जागते जिन्नो इन्स और मूज़ी (तक्लीफ़ पहुंचाने वाले) जानवरों से उस की हिफ़ाज़त करता है और हर सताने वाली चीज़ को उस से रोक देता है बजुज़ उस के जिस का पहुंचना मशिय्यत में हो। **32 :** मआ़सी में मुब्तला हो कर **33 :** उस के अ़ज़ाब व हलाक का इरादा फ़रमाए **34 :** जो उस के अ़ज़ाब को रोक सके। **35 :** कि उस से गिर कर नुक़्सान पहुंचाने का ख़ौ़फ़ होता है और बारिश से नफ़्अ़ उठाने की उम्मीद या बा'ज़ों को ख़ौ़फ़ होता है जैसे मुसाफ़िरों को जो सफ़र में हों और बा'ज़ों को फ़ाएदे की उम्मीद जैसे कि काश्तकार वग़ैरा। **36 :** गरज या'नी बादल

www.dawateislami.net

يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿۱۳﴾ لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ

चाहे और वोह अल्लाह में झगड़ते होते हैं[39] और उस की पकड़ सख़्त है उसी का पुकारना सच्चा है[40]

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ

और उस के सिवा जिन को पुकारते हैं[41] वोह उन की कुछ भी नहीं सुनते मगर उस की तरह़ जो पानी

كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا

के सामने अपनी हथेलियां फैलाए बैठा है कि उस के मुंह में पहुंच जाए[42] और वोह हरगिज़ न पहुंचेगा और काफ़िरों की हर दुआ

فِيْ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّ

भटकती फिरती है और अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जितने आस्मानों और ज़मीन में हैं ख़ुशी से[43] ख़्वाह मजबूरी से[44] और

से जो आवाज़ होती है। इस के तस्बीह़ करने के मा'ना येह हैं कि इस आवाज़ का पैदा होना ख़ालिक़, क़ादिर, हर नक़्स से मुनज़्ज़ा के वुजूद की दलील है। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि तस्बीह़े रा'द से वोह मुराद है कि इस आवाज़ को सुन कर **अल्लाह** के बन्दे उस की तस्बीह़ करते हैं। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि रा'द एक फ़िरिश्ते का नाम है जो बादल पर मामूर है इस को चलाता है। **37 :** या'नी उस की हैबतो जलाल से उस की तस्बीह़ करते हैं। **38 :** साइक़ा वोह शदीद आवाज़ है जो जव्व (आस्मान व ज़मीन के दरमियान) से उतरती है फिर उस में आग पैदा हो जाती है या अ़ज़ाब या मौत और वोह अपनी ज़ात में एक ही चीज़ है और येह तीनों चीज़ें उसी से पैदा होती हैं। (خازن) **39 शाने नुज़ूल :** ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अ़रब के एक निहायत सरकश काफ़िर को इस्लाम की दा'वत देने के लिये अपने अस्ह़ाब की एक जमाअ़त भेजी उन्हों ने उस को दा'वत दी कहने लगा : मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) का रब कौन है जिस की तुम मुझे दा'वत देते हो क्या वोह सोने का है या चांदी का या लोहे का या तांबे का ? मुसल्मानों को येह बात बहुत गिरां गुज़री और उन्हों ने वापस हो कर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि ऐसा अक्फ़र (सख़्त काफ़िर) सियाह दिल, सरकश देखने में नहीं आया। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : उस के पास फिर जाओ ! उस ने फिर वोही गुफ़्तगू की और इतना और कहा कि मैं मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की दा'वत क़बूल कर के ऐसे रब को मान लूं जिसे न मैं ने देखा है न पहचाना। येह ह़ज़रात फिर वापस हुए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि ह़ुज़ूर उस का ख़ुब्स (शर) तो और तरक़्क़ी पर है। फ़रमाया : फिर जाओ ! ब ता'मीले इर्शाद (हुक्म बजा लाते हुए) फिर गए जिस वक़्त उस से गुफ़्तगू कर रहे थे और वोह ऐसी ही सियाह दिली की बातें बक रहा था एक अब्र आया उस से बिजली चमकी और कड़क हुई और बिजली गिरी और उस काफ़िर को जला दिया। येह ह़ज़रात उस के पास बैठे रहे जब वहां से वापस हुए तो राह में उन्हें अस्ह़ाबे किराम की एक और जमाअ़त मिली वोह कहने लगे कहिये वोह शख़्स जल गया ? उन ह़ज़रात ने कहा कि आप साह़िबों को कैसे मा'लूम हो गया ? उन्हों ने फ़रमाया : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास वह़्य आई है "وَ یُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَیُصِیْبُ بِهَا مَنْ یَّشَآءُ وَهُمْ یُجَادِلُوْنَ فِی اللّٰهِ" । (خازن) **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्र किया है कि आ़मिर बिन तुफ़ैल ने अरबद बिन रबीआ़ से कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के पास चलो मैं उन्हें बातों में लगाऊंगा तू पीछे से तलवार से ह़म्ला करना, येह मश्वरा कर के वोह ह़ुज़ूर के पास आए और आ़मिर ने ह़ुज़ूर से गुफ़्तगू शुरूअ़ की, बहुत त़वील गुफ़्तगू के बा'द कहने लगा कि अब हम जाते हैं और एक बड़ा जर्रार लश्कर आप पर लाएंगे, येह कह कर चला आया, बाहर आ कर अरबद से कहने लगा कि तू ने तलवार क्यूं नहीं मारी ? उस ने कहा : जब मैं तलवार मारने का इरादा करता था तो तू दरमियान में आ जाता था, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन लोगों के निकलते वक़्त येह दुआ फ़रमाई : "اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْهِمَا بِمَا شِئْتَ" जब येह दोनों मदीने शरीफ़ से बाहर आए तो उन पर बिजली गिरी अरबद जल गया और आ़मिर भी इसी राह में बहुत बदतर ह़ालत में मरा। (حسینی) **40 :** या'नी उस की तौह़ीद की शहादत देना और "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहना या येह मा'ना हैं कि वोह दुआ क़बूल करता है और उसी से दुआ करना सज़ावार है। **41 :** मा'बूद जान कर या'नी कुफ़्फ़ार जो बुतों की इ़बादत करते हैं और उन से मुरादें मांगते हैं **42 :** तो हथेलियां फैलाने और बुलाने से पानी कूंएं से निकल कर उस के मुंह में न आएगा क्यूं कि पानी को न इ़ल्म है न शुऊ़र जो उस की ह़ाजत और प्यास को जाने और उस के बुलाने को समझे और पहचाने न उस में येह क़ुदरत है कि अपनी जगह से ह़रकत करे और अपने मुक़्तज़ाए त़बीअ़त (या'नी त़बीअ़त की ख़्वाहिश) के ख़िलाफ़ ऊपर चढ़ कर बुलाने वाले के मुंह में पहुंच जाए, येही ह़ाल बुतों का है कि न उन्हें बुत परस्तों के पुकारने की ख़बर है न उन की ह़ाजत का शुऊ़र न वोह उन के नफ़्अ़ पर कुछ क़ुदरत रखते हैं। **43 :** जैसे कि मोमिन **44 :** जैसे कि मुनाफ़िक़ व काफ़िर।

www.dawateislami.net

السجدة ٢

ظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ ۩ ﴿۱۵﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ

उन की परछाइयां हर सुब्ह़ व शाम[45] तुम फ़रमाओ कौन रब है आस्मानों और ज़मीन का

قُلِ اللّٰهُؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِیَآءَ لَا یَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ

तुम खुद ही फ़रमाओ **अल्लाह**[46] तुम फ़रमाओ तो क्या उस के सिवा तुम ने वोह ह़िमायती बना लिये हैं जो अपना

نَفْعًا وَّ لَا ضَرًّاؕ قُلْ هَلْ یَسْتَوِی الْاَعْمٰى وَ الْبَصِیْرُ ۙ۬ اَمْ هَلْ تَسْتَوِی

भला बुरा नहीं कर सकते हैं[47] तुम फ़रमाओ क्या बराबर हो जाएंगे अन्धा और अंख्यारा[48] या क्या बराबर हो जाएंगी

الظُّلُمٰتُ وَ النُّوْرُ ۚ۬ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ

अंधेरियां और उजाला[49] क्या **अल्लाह** के लिये ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्हों ने **अल्लाह** की त़रह कुछ बनाया तो उन्हें उन का और उस का बनाना

عَلَیْهِمْؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ وَّ هُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾ اَنْزَلَ مِنَ

एक सा मा'लूम हुवा[50] तुम फ़रमाओ **अल्लाह** हर चीज़ का बनाने वाला है[51] और वोह अकेला सब पर ग़ालिब है[52] उस ने

السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِیَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّیْلُ زَبَدًا رَّابِیًاؕ وَ

आस्मान से पानी उतारा तो नाले अपने अपने लाइक़ बह निकले तो पानी की रौ (धार) उस पर उभरे हुए झाग उठा लाई और

مِمَّا یُوْقِدُوْنَ عَلَیْهِ فِی النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْیَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗؕ كَذٰلِكَ

जिस पर आग दहकाते हैं[53] गहना (ज़ेवर) या और अस्बाब[54] बनाने को उस से भी वैसे ही झाग उठते हैं **अल्लाह**

یَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَ الْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَیَذْهَبُ جُفَآءًۚ وَ

बताता है कि ह़क़ और बात़िल की येही मिसाल है तो झाग तो फुक कर दूर हो जाता है और

45 : उन की तब्इय्यत में **अल्लाह** को सज्दा करती हैं। ज़ुज्जाज ने कहा कि काफ़िर "ग़ैरुल्लाह" को सज्दा करता है और उस का साया **अल्लाह** को। इब्ने अम्बारी ने कहा कि कुछ बईद नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला परछाइयों (या'नी साए) में ऐसी फ़ह्म (समझ) पैदा करे कि वोह उस को सज्दा करें। **बा'ज़** का क़ौल है : सज्दे से साए का एक त़रफ़ से दूसरी त़रफ़ माइल होना और आफ़्ताब के इरतिफ़ाअ़ व नुज़ूल (बुलन्द होने व ढलने) के साथ दराज़ व कोताह (लम्बा और छोटा) होना मुराद है। (خازن) **46 :** क्यूं कि इस सुवाल का इस के सिवा और कोई जवाब ही नहीं और मुश्रिकीन बा वुजूद ग़ैरुल्लाह की इबादत करने के इस के मुक़िर (इक़रार करने वाले) हैं कि आस्मान व ज़मीन का ख़ालिक़ **अल्लाह** है, जब येह अम्र मुसल्लम (माना हुवा) है तो **47 :** या'नी बुत। जब उन की येह बे क़ुदरती व बेचारगी है तो वोह दूसरे को क्या नफ़्अ़ व ज़रर पहुंचा सकते हैं ऐसों को मा'बूद बनाना और ख़ालिक़, राज़िक़, क़वी व क़ादिर को छोड़ना इन्तिहा दरजे की गुमराही है। **48 :** या'नी काफ़िर व मोमिन **49 :** या'नी कुफ़्र व ईमान **50 :** और इस वज्ह से ह़क़ उन पर मुश्तबह (मश्कूक) हो गया और वोह बुत परस्ती करने लगे, ऐसा तो नहीं है बल्कि जिन बुतों को वोह पूजते हैं **अल्लाह** की मख़्लूक़ की त़रह कुछ बनाना तो कुजा वोह बन्दों की मस्नूआत (तय्यार की हुई चीज़ों) के मिस्ल भी नहीं बना सकते आ़जिज़े मह्ज़ हैं, ऐसे पथ्थरों का पूजना अ़क़्लो दानिश के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। **51 :** जो मख़्लूक़ होने की सलाहि़य्यत रखे उस सब का ख़ालिक़ **अल्लाह** ही है और कोई नहीं तो दूसरे को शरीके इबादत करना आ़क़िल किस त़रह गवारा कर सकता है। **52 :** सब उस के तह़ते क़ुदरतो इख़्तियार हैं। **53 :** जैसे कि सोना, चांदी, तांबा वग़ैरा **54 :** बरतन वग़ैरा

www.dawateislami.net

اَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ

वोह जो लोगों के काम आए ज़मीन में रहता है[55] अल्लाह यूं ही मिसालें बयान

الْاَمْثَالَ ؕ ﴿۱۷﴾ لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا

फ़रमाता है जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म माना उन्हीं के लिये भलाई है[56] और जिन्हों ने उस का हुक्म न माना[57]

وقف النبي عليه السلام

لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ

अगर ज़मीन में जो कुछ है वोह सब और इस जैसा और उन की मिल्क में होता तो अपनी जान छुड़ाने को दे देते येही हैं

لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ۬ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۸﴾ ع اَفَمَنْ يَّعْلَمُ

ع ٢ النصف

जिन का बुरा हिसाब होगा[58] और उन का ठिकाना जहन्नम है और क्या ही बुरा बिछोना तो क्या वोह जो जानता है

اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ

जो कुछ तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा ह़क़ है[59] वोह उस जैसा होगा जो अन्धा है[60] नसीह़त वोही मानते हैं

اُولُوا الْاَلْبَابِ ۙ ﴿۱۹﴾ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ۙ ﴿۲۰﴾

जिन्हें अ़क़्ल है वोह जो अल्लाह का अ़हद पूरा करते हैं[61] और क़ौल बांध कर (वा'दा कर के) फिरते नहीं

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَ

और वोह कि जोड़ते हैं उसे जिस के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया[62] और अपने रब से डरते और

يَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ؕ ﴿۲۱﴾ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَ

ह़िसाब की बुराई से अन्देशा रखते हैं[63] और वोह जिन्हों ने सब्र किया[64] अपने रब की रिज़ा चाहने को और

55 : ऐसे ही बात़िल अगर्चे कितना ही उभर जाए और बा'ज़ अवक़ात व अह़वाल में झाग की त़रह़ ह़द से ऊंचा हो जाए मगर अन्जामे कार मिट जाता है और ह़क़ अस्ले शै और जौहरे साफ़ की त़रह़ बाक़ी व साबित रहता है। **56 :** या'नी जन्नत **57 :** और कुफ़्र किया **58 :** कि हर अम्र पर मुआख़ज़ा किया जाएगा और उस में से कुछ न बख़्शा जाएगा। (جلالین و خازن) **59 :** और उस पर ईमान लाता है और उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करता है **60 :** ह़क़ को नहीं जानता, क़ुरआन पर ईमान नहीं लाता, उस के मुत़ाबिक़ अ़मल नहीं करता। येह आयत ह़ज़रते ह़म्ज़ा इब्ने अ़ब्दुल मुत्त़लिब और अबू जह्ल के ह़क़ में नाज़िल हुई। **61 :** उस की रबूबिय्यत की शहादत देते हैं और उस का हुक्म मानते हैं **62 :** या'नी अल्लाह की तमाम किताबों और उस के कुल रसूलों पर ईमान लाते हैं और बा'ज़ को मान कर बा'ज़ से मुन्किर हो कर उन में तफ़्रीक़ (जुदाई) नहीं करते या येह मा'ना हैं कि हुक़ूक़े क़राबत की रिआ़यत रखते हैं और रिश्ता क़त़्अ़ नहीं करते, इसी में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की क़राबतें और ईमानी क़राबतें भी दाख़िल हैं, सादाते किराम का एह़तिराम और मुसल्मानों के साथ मवद्दत (प्यार व मह़ब्बत) व एह़सान और उन की मदद और उन की त़रफ़ से मुदाफ़अ़त (दिफ़ाअ़) और उन के साथ शफ़्क़त और सलाम व दुआ़ और मुसल्मान मरीज़ों की इ़यादत और अपने दोस्तों ख़ादिमों हमसायों, सफ़र के साथियों के हुक़ूक़ की रिआ़यत भी इस में दाख़िल है और शरीअ़त में इस का लिह़ाज़ रखने की बहुत ताकीदें आई हैं ब कसरत अह़ादीसे सह़ीह़ा इस बाब में वारिद हैं। **63 :** और वक़्ते ह़िसाब से पहले ख़ुद अपने नफ़्सों से मुह़ासबा करते हैं **64 :** त़ाअ़तों और मुसीबतों पर और मा'सियत से बाज़ रहे।

www.dawateislami.net

اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً وَّ يَدْرَءُوْنَ

नमाज़ क़ाइम रखी और हमारे दिये से हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर कुछ ख़र्च किया[65] और बुराई के बदले

بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۙ﴿٢٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا

भलाई कर के टालते हैं[66] उन्हीं के लिये पिछले घर का नफ़्अ़ है बसने के बाग़ जिन में वोह दाख़िल होंगे

وَ مَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآىٕهِمْ وَ اَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ يَدْخُلُوْنَ

और जो लाइक़ हों[67] उन के बाप दादा और बीबियों और औलाद में[68] और फ़िरिश्ते[69] हर दरवाज़े से

عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ؕ﴿٢٤﴾

उन पर[70] येह कहते आएंगे सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला

وَ الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَ يَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ

और वोह जो **अल्लाह** का अ़हद उस के पक्के होने[71] के बा'द तोड़ते और जिस के जोड़ने को **अल्लाह** ने फ़रमाया

بِهٖۤ اَنْ يُّوْصَلَ وَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓىٕكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَ لَهُمْ سُوْٓءُ

उसे क़त्अ़ करते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं[72] उन का हिस्सा ला'नत ही है और उन का नसीबा बुरा

الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ وَ فَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ

घर[73] **अल्लाह** जिस के लिये चाहे रिज़्क़ कुशादा और[74] तंग करता है और काफ़िर दुन्या की ज़िन्दगी पर

ع ٣ الدُّنْيَا ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾ ع وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ

इतरा गए[75] और दुन्या की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबिल नहीं मगर कुछ दिन बरत लेना और काफ़िर कहते

كَفَرُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ

इन पर कोई निशानी इन के रब की त़रफ़ से क्यूं न उतरी तुम फ़रमाओ बेशक **अल्लाह** जिसे चाहे गुमराह करता है[76]

65 : नवाफ़िल का छुपाना और फ़राइज़ का ज़ाहिर करना अफ़्ज़ल है। **66 :** बद कलामी का जवाब शीरीं सुख़नी (ख़ुश कलामी) से देते हैं और जो उन्हें महरूम करता है उस पर अ़त़ा करते हैं, जब उन पर ज़ुल्म किया जाता है मुआफ़ करते हैं, जब उन से पैवन्द (तअ़ल्लुक़) क़त्अ़ किया जाता है मिलाते हैं और जब गुनाह करते हैं तौबा करते हैं, जब ना जाइज़ काम देखते हैं उसे बदलते हैं, जहल के बदले ह़िल्म और ईज़ा के बदले सब्र करते हैं। **67 :** या'नी मोमिन हों **68 :** अगर्चे लोगों ने उन के से अ़मल न किये हों जब भी **अल्लाह** तआ़ला उन के इक्राम के लिये इन को उन के दरजे में दाख़िल फ़रमाएगा **69 :** हर एक रोज़ो शब में हदाया (तोह़फ़े) और रिज़ा की बिशारतें ले कर जन्नत के **70 :** ब त़रीक़े तह़िय्यतो तक्रीम (इज़्ज़तो एह़तिराम) **71 :** और उस को क़बूल कर लेने **72 :** कुफ़्र व मआ़सी का इरतिकाब कर के **73 :** या'नी जहन्नम। **74 :** जिस के लिये चाहे **75 :** और शुक्र गुज़ार न हुए। **मस्अला :** दौलते दुन्या पर इतराना और मग़रूर होना ह़राम है। **76 :** कि वोह आयात व मो'जिज़ात नाज़िल होने के बा'द भी येह कहता रहता है कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी, कोई मो'जिज़ा क्यूं नहीं आया, मो'जिज़ाते कसीरा के बा वुजूद गुमराह रहता है।

www.dawateislami.net

وَ يَهْدِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿۲۷﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَىٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ

और अपनी राह उसे देता है जो उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाए वोह जो ईमान लाए और उन के दिल **अल्लाह** की याद से चैन

اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ ؕ ﴿۲۸﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

पाते हैं सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है[77] वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَ حُسْنُ مَاٰبٍ ﴿۲۹﴾ كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْۤ اُمَّةٍ

काम किये उन को ख़ुशी है और अच्छा अन्जाम[78] इसी त़रह़ हम ने तुम को इस उम्मत में भेजा

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَاۤ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَاۡ عَلَيْهِمُ الَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ وَ هُمْ

जिस से पहले उम्मतें हो गुज़रीं[79] कि तुम उन्हें पढ़ कर सुनाओ[80] जो हम ने तुम्हारी त़रफ़ वह़्य की और वोह

يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ اِلَيْهِ

रह़मान के मुन्किर हो रहे हैं[81] तुम फ़रमाओ वोह मेरा रब है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की त़रफ़

مَتَابِ ﴿۳۰﴾ وَ لَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ

मेरी रुजूअ़ है और अगर कोई ऐसा क़ुरआन आता जिस से पहाड़ टल जाते[82] या ज़मीन फट जाती

اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

या मुर्दे बातें करते जब भी येह काफ़िर न मानते[83] बल्कि सब काम **अल्लाह** ही के इख़्तियार में हैं[84] तो क्या मुसलमान इस से ना उम्मीद न हुए[85]

77 : उस के रह़मतो फ़ज़्ल और उस के एह़सानो करम को याद कर के बे क़रार दिलों को क़रार व इत़्मीनान ह़ासिल होता है। अगर्चे उस के अ़द्ल व इ़ताब (ग़ज़ब) की याद दिलों को ख़ाइफ़ कर देती है जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया : ''اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ'' ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि मुसल्मान जब **अल्लाह** का नाम ले कर क़सम खाता है दूसरे मुसल्मान उस का ए'तिबार कर लेते हैं और उन के दिलों को इत़्मीनान हो जाता है। **78 :** ''त़ूबा'' बिशारत है राह़तो ने'मत और ख़ुर्रमी व ख़ुशह़ाली की। सईद बिन जुबैर ने कहा कि त़ूबा ज़बाने ह़बशी में जन्नत का नाम है। ह़ज़रते अबू हुरैरा और दीगर अस्ह़ाब से मरवी है कि त़ूबा जन्नत के एक दरख़्त का नाम है जिस का साया हर जन्नत में पहुंचेगा, येह दरख़्त जन्नते अ़दन में है और इस की अस्ल (जड़) सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के ऐवाने मुअ़ल्ला में और इस की शाख़ें जन्नत के हर ग़ुरफ़ा (कमरे) और क़स्र (मह़ल) में, इस में सिवा सियाही के हर क़िस्म के रंग और ख़ुशनुमाइयां हैं हर त़रह़ के फल और मेवे इस में फले हैं, इस की बेख़ (जड़) से काफ़ूर सल्सबील (एक चश्मा) की नहरें रवां हैं। **79 :** तो तुम्हारी उम्मत सब से पिछली उम्मत है और तुम ख़ातमुल अम्बिया हो तुम्हें बड़े शानो शिकोह से रिसालत अ़त़ा की **80 :** वोह किताबे अ़ज़ीम **81 शाने नुज़ूल :** क़तादा व मुक़ातिल वग़ैरा का क़ौल है कि येह आयत सुल्हे़ हुदैबिया में नाज़िल हुई जिस का मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि सुहैल बिन अ़म्र जब सुल्ह़ के लिये आया और सुल्ह़ नामा लिखने पर इत्तिफ़ाक़ हो गया तो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : लिखो ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ'' कुफ़्फ़ार ने इस में झगड़ा किया और कहा कि आप हमारे दस्तूर के मुत़ाबिक़ ''بِاسْمِکَ اللّٰهُمَّ'' (या'नी ऐ **अल्लाह** तेरे नाम से शुरूअ़) लिखवाइये। इस के मुतअ़ल्लिक़ आयत में इर्शाद होता है कि वोह रह़मान के मुन्किर हो रहे हैं। **82 :** अपनी जगह से **83 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर आप येह चाहें कि हम आप की नुबुव्वत मानें और आप का इत्तिबाअ़ करें तो आप क़ुरआन शरीफ़ पढ़ कर इस की तासीर से मक्कए मुकर्रमा के पहाड़ हटा दीजिये ताकि हमें खेतियां करने (काश्त कारी) के लिये वसीअ़ मैदान मिल जाएं और ज़मीन फाड़ कर चश्मा जारी कीजिये ताकि हम खेतों और बाग़ों को उन से सैराब करें और क़ुसय बिन किलाब वग़ैरा हमारे मरे हुए बाप दादा को ज़िन्दा कर दीजिये

www.dawateislami.net

اَنۡ لَّوۡ یَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَی النَّاسَ جَمِیۡعًا ؕ وَلَا یَزَالُ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا

कि अल्लाह चाहता तो सब आदमियों को हिदायत कर देता[86] और काफ़िरों को हमेशा उन के किये

تُصِیۡبُهُمۡ بِمَا صَنَعُوۡا قَارِعَةٌ اَوۡ تَحُلُّ قَرِیۡبًا مِّنۡ دَارِهِمۡ حَتّٰی یَاۡتِیَ

पर सख़्त धमक (इन्तिहाई सख़्त मुसीबत) पहुंचती रहेगी[87] या उन के घरों के नज़्दीक उतरेगी[88] यहां तक कि

وَعۡدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُخۡلِفُ الۡمِیۡعَادَ ﴿۳۱﴾ وَلَقَدِ اسۡتُهۡزِیَٔ بِرُسُلٍ ع ۴

अल्लाह का वा'दा आए[89] बेशक अल्लाह वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता[90] और बेशक तुम से अगले रसूलों

مِّنۡ قَبۡلِكَ فَاَمۡلَیۡتُ لِلَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا ثُمَّ اَخَذۡتُهُمۡ ۫ فَكَیۡفَ كَانَ

पर भी हंसी की गई तो मैं ने काफ़िरों को कुछ दिनों ढील दी फिर उन्हें पकड़ा[91] तो मेरा अ़ज़ाब

عِقَابِ ﴿۳۲﴾ اَفَمَنۡ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰی كُلِّ نَفۡسٍۭ بِمَا كَسَبَتۡ ؕ وَجَعَلُوۡا لِلّٰهِ

कैसा था तो क्या वोह जो हर जान पर उस के आ'माल की निगहदाश्त रखता है[92] और वोह अल्लाह के शरीक

شُرَكَآءَ ؕ قُلۡ سَمُّوۡهُمۡ ؕ اَمۡ تُنَبِّـُٔوۡنَهٗ بِمَا لَا یَعۡلَمُ فِی الۡاَرۡضِ اَمۡ بِظَاهِرٍ

ठहराते हैं तुम फ़रमाओ उन का नाम तो लो[93] या उसे वोह बताते हो जो उस के इल्म में सारी ज़मीन में नहीं[94] या यूंही ऊपरी

वोह हम से कह जाएं कि आप नबी हैं। इस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई और बता दिया गया कि येह हीले हवाले करने वाले किसी हाल में भी ईमान लाने वाले नहीं। **84 :** तो ईमान वोही लाएगा जिस को अल्लाह चाहे और तौफ़ीक़ दे, उस के सिवा और कोई ईमान लाने वाला नहीं अगर्चे उन्हें वोही निशान दिखा दिये जाएं जो वोह त़लब करें **85 :** या'नी कुफ़्फ़ार के ईमान लाने से ख़्वाह उन्हें कितनी ही निशानियां दिखला दी जाएं और क्या मुसल्मानों को इस का यक़ीनी इल्म नहीं **86 :** बिग़ैर किसी निशानी के लेकिन वोह जो चाहता है करता है और वोही हिक्मत है, येह जवाब है उन मुसल्मानों का जिन्हों ने कुफ़्फ़ार के नई नई निशानियां त़लब करने पर येह चाहा था कि जो काफ़िर भी कोई निशानी त़लब करे वोही उस को दिखा दी जाए। इस में उन्हें बता दिया गया कि जब ज़बर दस्त निशान आ चुके और शुकूको अवहाम की तमाम राहें बन्द कर दी गईं, दीन की ह़क़्क़ानिय्यत रोज़े रोशन से ज़ियादा वाज़ेह़ हो चुकी, इन जली बुरहानों (रोशन दलीलों) के बा वुजूद जो लोग मुकर गए, ह़क़ के मो'तरिफ़ न हुए (ह़क़ को न माने) ज़ाहिर हो गया कि वोह मुआ़निद (बुज़ो कीना रखने वाले) हैं और मुआ़निद किसी दलील से भी माना नहीं करता तो मुसल्मानों को अब उन से क़बूले ह़क़ की क्या उम्मीद। क्या अब तक उन का इ़नाद देख कर और आयातो बय्यिनाते वाज़ेह़ा (साफ़ और रोशन दलीलों) से ए'राज़ मुशाहदा कर के भी उन से क़बूले ह़क़ की उम्मीद रखी जा सकती है ? अलबत्ता अब उन के ईमान लाने और मान जाने की येही सूरत है कि अल्लाह तआ़ला उन्हें मजबूर करे और उन का इख़्तियार सल्ब फ़रमा ले। इस त़रह़ की हिदायत चाहता तो तमाम आदमियों को हिदायत फ़रमा देता और कोई काफ़िर न रहता मगर दारुल इब्तिला व दारुल इम्तिह़ान की हिक्मत इस की मुतक़ाज़ी नहीं। **87 :** या'नी वोह इस तक्ज़ीब व इ़नाद की वज्ह से त़रह़ त़रह़ के ह़वादिस व मसाइब और आफ़तों और बलाओं में मुब्तला रहेंगे कभी क़ह़त़ में, कभी लुटने में, कभी मारे जाने में, कभी क़ैद में। **88 :** और उन के इज़्त़िराब व परेशानी का बाइ़स होगी और उन तक उन मसाइब के ज़रर (नुक़्सानात) पहुंचेंगे **89 :** अल्लाह की त़रफ़ से फ़त्ह़ो नुसरत आए और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और इन का दीन ग़ालिब हो और मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ किया जाए। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इस वा'दे से रोज़े क़ियामत मुराद है जिस में आ'माल की जज़ा दी जाएगी। **90 :** इस के बा'द अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर (तसल्ली व दिलजूई) फ़रमाता है कि इस क़िस्म के बेहूदा सुवाल और ऐसे तमस्ख़ुर व इस्तिह़ज़ा (ठट्ठे और मज़ाक़) से आप रन्जीदा न हों क्यूं कि हादियों को ऐसे वाक़िआ़त पेश आया ही करते हैं। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाता है **91 :** और दुन्या में उन्हें क़ह़त़ व क़त्ल व क़ैद में मुब्तला किया और आख़िरत में उन के लिये अ़ज़ाबे जहन्नम है **92 :** नेक की भी बद की भी या'नी अल्लाह तआ़ला क्या वोह उन बुतों की मिस्ल हो सकता है जो ऐसे नहीं, न उन्हें इल्म है न क़ुदरत, आ़जिज़ बे शुऊ़र हैं **93 :** वोह हैं कौन **94 :** और जो उस के इल्म में न हो वोह बातिले महज़ है, हो ही नहीं सकता क्यूं कि उस का इल्म हर चीज़ को मुह़ीत है लिहाज़ा उस के लिये शरीक होना बातिल व ग़लत़।

www.dawateislami.net

مِّنَ الۡقَوۡلِ ؕ بَلۡ زُيِّنَ لِلَّذِيۡنَ كَفَرُوا مَكۡرُهُمۡ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيۡلِ ؕ

(बे मा'ना) बात[95] बल्कि काफ़िरों की निगाह में उन का फ़रेब अच्छा ठहरा है और राह से रोके गए[96]

وَمَنۡ يُّضۡلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنۡ هَادٍ ۝۳۳ لَهُمۡ عَذَابٌ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَ

और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं उन्हें दुन्या के जीते अ़ज़ाब होगा[97] और

لَعَذَابُ الۡاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ وَّاقٍ ۝۳۴ مَثَلُ الۡجَنَّةِ

बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से सख़्त है और उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं अह़वाल उस जन्नत का

الَّتِىۡ وُعِدَ الۡمُتَّقُوۡنَ ؕ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ؕ

कि डर वालों के लिये जिस का वा'दा है उस के नीचे नहरें बहती हैं उस के मेवे हमेशा और उस का साया[98]

تِلۡكَ عُقۡبَى الَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا ۖ وَّعُقۡبَى الۡكٰفِرِيۡنَ النَّارُ ۝۳۵ وَالَّذِيۡنَ اٰتَيۡنٰهُمُ

डर वालों का तो येह अन्जाम है[99] और काफ़िरों का अन्जाम आग और जिन को हम ने

الۡكِتٰبَ يَفۡرَحُوۡنَ بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ وَمِنَ الۡاَحۡزَابِ مَنۡ يُّنۡكِرُ بَعۡضَهٗ ؕ

किताब दी[100] वोह उस पर ख़ुश होते जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और उन गुरौहों में[101] कुछ वोह हैं कि इस के बा'ज़ से मुन्किर हैं

قُلۡ اِنَّمَاۤ اُمِرۡتُ اَنۡ اَعۡبُدَ اللّٰهَ وَلَاۤ اُشۡرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيۡهِ اَدۡعُوۡا وَاِلَيۡهِ

तुम फ़रमाओ मुझे तो येही हुक्म है कि अल्लाह की बन्दगी करूं और उस का शरीक न ठहराऊं मैं उसी की त़रफ़ बुलाता हूं और उसी की त़रफ़

مَاٰبِ ۝۳۶ وَكَذٰلِكَ اَنۡزَلۡنٰهُ حُكۡمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعۡتَ اَهۡوَآءَهُمۡ

मुझे फिरना[102] और इसी त़रह़ हम ने इसे अ़रबी फ़ैसला उतारा[103] और ऐ सुनने वाले अगर तू उन की ख़्वाहिशों पर चलेगा[104]

بَعۡدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الۡعِلۡمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِىٍّ وَّلَا وَاقٍ ۝۳۷ وَلَقَدۡ ع

बा'द इस के कि तुझे इ़ल्म आ चुका तो अल्लाह के आगे न तेरा कोई ह़िमायती होगा न बचाने वाला और बेशक

95 : के दरपै होते हो जिस की कुछ अस्ल व ह़क़ीक़त नहीं 96 : या'नी रुश्दो हिदायत और दीन की राह से 97 : क़त्ल व क़ैद का 98 : या'नी उस के मेवे और उस का साया दाइमी है इन में से कोई मुन्क़त़अ़ और ज़ाइल होने वाला नहीं। जन्नत का ह़ाल अ़जीब है इस में न सूरज है न चांद न तारीकी, बा वुजूद इस के ग़ैर मुन्क़त़अ़ दाइमी (न ख़त्म होने वाला हमेशा का) साया है। 99 : या'नी तक़्वा वालों के लिये जन्नत है 100 : या'नी वोह यहूदो नसारा जो इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरा और ह़बशा व नजरान के नसरानी। 101 : यहूदो नसारा व मुश्रिकीन के जो आप की अ़दावत में सरशार हैं और आप पर उन्हों ने चढ़ाइयां की हैं। 102 : इस में क्या बात क़ाबिले इन्कार है क्यूं नहीं मानते 103 : या'नी जिस त़रह़ पहले अम्बिया को उन की ज़बानों में अह़काम दिये थे इसी त़रह़ हम ने येह क़ुरआन ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! आप की ज़बान अ़रबी में नाज़िल फ़रमाया। क़ुरआने करीम को हुक्म इस लिये फ़रमाया कि इस में अल्लाह की इ़बादत और उस की तौह़ीद और उस के दीन की त़रफ़ दा'वत और तमाम तकालीफ़ व अह़काम और ह़लाल व ह़राम का बयान है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : चूंकि अल्लाह तआ़ला ने तमाम ख़ल्क़ पर क़ुरआन शरीफ़ के क़बूल करने और इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करने का हुक्म फ़रमाया इस लिये इस का नाम हुक्म रखा। 104 : या'नी काफ़िरों की जो अपने दीन की

ع ۴

www.dawateislami.net

اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ

हम ने तुम से पहले रसूल भेजे और उन के लिये बीबियां[105] और बच्चे किये और किसी

لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ٣٨ يَمْحُوا

रसूल का काम नहीं कि कोई निशानी ले आए मगर **अल्लाह** के हुक्म से हर वा'दे की एक लिखत (तह्रीर) है[106] **अल्लाह** जो

اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚۖ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ٣٩ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ

चाहे मिटाता और साबित करता है[107] और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है[108] और अगर हमीं तुम्हें दिखा दें

بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا

कोई वा'दा[109] जो उन्हें दिया जाता है या पहले ही[110] अपने पास बुला लें तो बहर हाल तुम पर तो सिर्फ़ पहुंचाना है और हिसाब लेना[111]

الْحِسَابُ ٤٠ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ

हमारा ज़िम्मा[112] क्या उन्हें नहीं सूझता कि हम हर त़रफ़ से उन की आबादी घटाते आ रहे हैं[113] और **अल्लाह**

يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ٤١ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ

हुक्म फ़रमाता है उस का हुक्म पीछे डालने वाला कोई नहीं[114] और उसे हिसाब लेते देर नहीं लगती और उन से अगले[115] फ़रेब

قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ

कर चुके हैं तो सारी ख़ुफ़्या तदबीर का मालिक तो **अल्लाह** ही है[116] जानता है जो कुछ कोई जान कमाए[117] और अब जानना चाहते हैं काफ़िर

त़रफ़ बुलाते हैं **105 शाने नुज़ूल :** काफ़िरों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर येह ऐ़ब लगाया था कि वोह निकाह़ करते हैं अगर नबी होते तो दुन्या तर्क कर देते, बीबी बच्चे से कुछ वासित़ा न रखते। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि बीबी बच्चे होना नुबुव्वत के मुनाफ़ी नहीं, लिहाज़ा येह ए'तिराज़ मह़्ज़ बे जा है और पहले जो रसूल आ चुके हैं वोह भी निकाह़ करते थे उन के भी बीबियां और बच्चे थे **106 :** उस से मुक़द्दम व मुअख़्ख़र नहीं हो सकता ख़्वाह वोह वा'दा अ़ज़ाब का हो या कोई और **107 :** सई़द बिन जुबैर और क़तादा ने इस आयत की तफ़्सीर में कहा कि **अल्लाह** जिन अह़काम को चाहता है मन्सूख़ फ़रमाता है, जिन्हें चाहता है बाक़ी रखता है। इन्हीं इब्ने जुबैर का एक क़ौल येह है कि बन्दों के गुनाहों में से **अल्लाह** जो चाहता है मग़्फ़िरत फ़रमा कर मिटा देता है और जो चाहता है साबित रखता है। इक्रिमा का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला तौबा से जिस गुनाह को चाहता है मिटाता है और उस की जगह नेकियां क़ाइम फ़रमाता है और इस की तफ़्सीर में और भी बहुत अक़्वाल हैं **108 :** जिस को उस ने अज़ल में लिखा। येह इ़ल्मे इलाही है या उम्मुल किताब से लौह़े मह़फ़ूज़ मुराद है जिस में तमाम काएनात और आ़लम में होने वाले जुम्ला ह़वादिस व वाक़िआ़त और तमाम अश्या मक्तूब हैं और इस में तग़य्युर व तबद्दुल नहीं होता। **109 :** अ़ज़ाब का **110 :** हम तुम्हें **111 :** और आ'माल की जज़ा देना **112 :** तो आप काफ़िरों के ए'राज़ करने से रन्जीदा न हों और अ़ज़ाब की जल्दी न करें। **113 :** और ज़मीने शिर्क की वुस्अ़त दम बदम कम कर रहे हैं और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये कुफ़्फ़ार के गिर्दो पेश की अराज़ी यके बा'द दीगरे फ़त्ह़ होती चली जाती है और येह सरीह़ दलील है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब की मदद फ़रमाता है और इन के लश्कर को फ़त्ह़ मन्द करता है और इन के दीन को ग़लबा देता है। **114 :** उस का हुक्म नाफ़िज़ है किसी की मजाल नहीं कि उस में चूं चरा या तग़ीर व तब्दील कर सके, जब वोह इस्लाम को ग़लबा देना चाहे और कुफ़्र को पस्त करना तो किस की ताब व मजाल कि उस के हुक्म में दख़्ल दे सके। **115 :** या'नी गुज़री हुई उम्मतों के कुफ़्फ़ार अपने अम्बिया के साथ **116 :** फिर बिग़ैर उस की मशिय्यत के किसी की क्या चल सकती है और जब ह़क़ीक़त येह है तो मख़्लूक़ का क्या अन्देशा। **117 :** हर एक का कस्ब **अल्लाह** तआ़ला को मा'लूम है और उस के नज़्दीक उन की जज़ा मुक़र्रर है।

www.dawateislami.net

لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ

किसे मिलता है पिछला घर[118] और काफ़िर कहते हैं तुम रसूल नहीं तुम फ़रमाओ

كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾ ع ٢

अल्लाह गवाह काफ़ी है मुझ में और तुम में[119] और वोह जिसे किताब का इल्म है[120]

اٰیاتها ٥٢ | ١٤ سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ ٧٢ | رکوعاتها ٧

सूरए इब्राहीम मक्किय्या है, इस में बावन आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

الٓرٰ ۚ قف كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

एक किताब है[2] कि हम ने तुम्हारी तरफ़ उतारी कि तुम लोगों को[3] अंधेरियों से[4] उजाले में लाओ[5]

بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿١﴾ ۙ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

उन के रब के हुक्म से उस की राह[6] की तरफ़ जो इ़ज़्ज़त वाला सब ख़ूबियों वाला है अल्लाह कि उसी का है जो कुछ आस्मानों में है

وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ﴿٢﴾ ۙ الَّذِيْنَ

और जो कुछ ज़मीन में[7] और काफ़िरों की ख़राबी है एक सख़्त अ़ज़ाब से जिन्हें

يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

आख़िरत से दुन्या की ज़िन्दगी प्यारी है और अल्लाह की राह से रोकते[8]

وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ

और इस में कजी (टेढ़ापन) चाहते हैं वोह दूर की गुमराही में हैं[9] और हम ने हर रसूल

---

118 : या'नी काफ़िर अ़न्क़रीब जान लेंगे कि राहते आख़िरत मोमिनीन के लिये है और वहां की ज़िल्लतो ख़्वारी कुफ़्फ़ार के लिये है। **119 :** जिस ने मेरे हाथों में मो'जिज़ाते बाहिरा व आयाते क़ाहिरा ज़ाहिर फ़रमा कर मेरे नबिय्ये मुरसल होने की शहादत दी। **120 :** ख़्वाह वोह उ़लमाए यहूद में से तौरैत का जानने वाला हो या नसारा में से इन्जील का आ़लिम, वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत को अपनी किताबों में देख कर जानता है, इन उ़लमा में से अक्सर आप की रिसालत की शहादत देते हैं। **1 :** सूरए इब्राहीम मक्किय्या है सिवाए आयत "اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا" और इस के बा'द वाली आयत के। इस सूरत में सात रुकूअ़ बावन आयतें आठ सो इक्सठ कलिमे, तीन हज़ार चार सो चौंतीस हर्फ़ हैं **2 :** येह क़ुरआन शरीफ़ **3 :** कुफ़्रो ज़लालत व जहलो ग़वायत (जहालत व गुमराहिय्यत) की **4 :** ईमान के **5 :** ज़ुल्मात को जम्अ़ और नूर को वाहिद के सीग़े से ज़िक्र फ़रमाने में ईमा (इशारा) है कि दीने हक़ की राह एक है और कुफ़्रो ज़लालत के तरीक़े कसीर। **6 :** या'नी दीने इस्लाम **7 :** वोह सब का ख़ालिक़ो मालिक है, सब उस के बन्दे और मम्लूक (क़ब्ज़े में हैं) तो उस की इ़बादत सब पर लाज़िम और उस के सिवा किसी की इ़बादत रवा नहीं। **8 :** और लोगों को दीने इलाही

www.dawateislami.net